Bodhi-Path Year 2023 July Issue Volume 25 Page No 1-2

संपादिका

प्राचीन भारतीय स्त्रीयों की स्थिति की ऐतिहासिकता समय ,शासक, स्थान के अनुसार बदलती रही है यो तो भारतीय महिलाये सब क्षेत्र में विश्व प्रसिद्व रही है ज्ञान – विज्ञान में तो थी ही साथ साथ बौद्ध धर्म के बारे में ज्यादा प्रसिद्ध रही है, वैदिक काल में वे पुरूषों के साथ बराबर की स्थिति में होती थी पर यह स्तर उत्तर वैदिक काल में उनका नहीं रहा, उनको पुरुसो के समक्ष भगीदारी नहीं मिलने लगी, स्त्रीयों की गिरी हुई स्थिति का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है की उनकी तुलना विसेले सर्प से की जाने लगी अर्थात उनसे दूरियां बनाके रखने की सलाह तक दी जाने लगी, बौद्ध धर्म ने महिलाओ को इस स्थिति से बाहर निकाल कर पुनः उचित स्थान दिलाया आनंद के कहने पर बुद्ध ने स्त्रीयों के लिए मोक्ष प्राप्ति के द्वार खोल दिए बौद्ध धर्म में वे निर्वाण प्राप्त कर सकती थी, बौद्ध मठों में निवास कर सकती, बौद्ध भिक्षुणिया बन सकती थी, बौद्ध काल में महिलाओं को बौद्ध धर्म के साथ साथ विज्ञान की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी ,उनके गीतों को थेरीगाथा में संकलन किया गया ताकि भविष्य में बौद्ध भिक्षुणियो को ये ज्ञान मिलसके, कई स्त्रीयों को निर्वाण मिलने की बात भी विनय पिटक जैसे पाली बौद्ध ग्रंथो में वर्णित है।

प्राचीनकाल में बौद्ध भिक्खुनियों ने 'थेरी गाथाएँ' लिखी। थेरीगाथाओं में नारी की दशा के ऐतिहासिक महत्व को समझने के लिए मत दृष्टव्य है– ''वृद्ध बौद्ध भिक्षु 'थेर' (स्थविर) कहलाते थे और वृद्धा बौद्ध भिक्खुनियाँ 'थेरी' (स्थविराएँ) कहलाती थीं। इन वृद्धाओं ने सामाजिक बन्धनों से अपनी मुक्ति के तथा स्त्री–पुरुष की

समानता के जो गीत गाये, वे 'थेरीगाथा' कहलाते हैं, क्योंकि उनके इन गीतों को गाने वाली स्त्रियों के आध्यात्मिक अनुभवों के साथ–साथ उनके जीवन की संक्षिप्त कहानियाँ कही गयी हैं। उन कहानियों से तत्कालीन समाज की और उस समय में स्त्री–पुरुष संबंधों की कुछ झलक मिलती है। ... ये रचनाएँ स्त्रियों के अपने लेखन तथा अपने बारे में किये गये लेखन के सबसे प्राचीन प्रमाण हैं। इससे पता चलता है कि स्त्रियों का आध्यात्मिक अनुभव पुरुषों के आध्यात्मिक अनुभव से भिन्न नहीं है। जैसे पुरुष अपनी मुक्ति या निर्वाण के बारे में सोचते हैं, वैसे ही स्त्रियाँ भीऐसा नहीं है कि बौद्ध काल में पुरुष की तुलना में नारी को समानता का दर्जा प्राप्त हो गया था। शिक्षा के अधिकार ने समाज में नारी भिक्षुणियों को अपनी उपस्थिति को पुनर्परिभाषित करने का एक अवसर प्रदान किया। जिससे यह युग नारी उत्थान के लिए आगे आने वाले समय के लिए प्रेरणास्रोत अवश्य रहा।

डॉ॰ संघमित्रा बौद्ध